Research Paper Journalism

सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव

डॉ. विजय प्रकाश उपाध्याय | सहायक आचार्य, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, शिया पीजी कॉलेज, लखनऊ

ABSTRACT

वर्तमान में सोशल मीडिया आम व्यक्ति के लिए अपने विचार व्यक्त करने का सबसे आसान माध्यम है| नवाचारों का दौर है| सूचना तकनीक ने संचार जगत में क्रांति ला दी है| भारत की बात करें तो वर्तमान में लगभग 40 करोड़ इंटरनेट प्रयोगकर्ता हैं| इन प्रयोगकर्ताओं में लगभग 75 फीसदी प्रयोगकर्ता सोशल मीडिया का प्रयोग कर रहे हैं| अन्ना के आन्दोलन से लेकर जैसमीन रेवोल्यूशन और दामिनी को इंसाफ दिलाने में सोशल मीडिया की भूमिका के चर्चे विश्व विख्यात हैं| एक तरफ जहां सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलू हैं, तो साथ ही सोशल मीडिया के जरिए आतंकवाद, अफवाह एवं धोखा धड़ी की वारदातें भी समाने आ रही हैं| प्रस्तुत शोध पत्र में सोशल मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक असर का अध्ययन किया गया है|

KEYWORDS सोशल मीडिया, समाज, प्रभाव|

भूमिका

मशहूर जनसंचाशास्त्री मार्शल मैकलुहन ने कहा है कि "माध्यम ही सन्देश" है| यदि उनके इन शब्दों पर गौर करें तो सन्देश संवहन में माध्यम की अहम भूमिका नजर आती है| अतः माध्यम की पहुंच एवं प्रभावशीलता पर सन्देश की प्रभावशीलता निर्भर करती है| वर्तमान में सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिसकी पहुंच का दायरा विश्व व्यापी है| आज न्यूज सोशल मीडिया पर ब्रेक होकर समाचार चैनलों एवं पत्र-पत्रिकाओं की सुर्खियां बन रही है| सेल्फी अपलोड करने की होड़ आम से लेकर खास सभी में लगी हुई है| कॉर्पोरेट जगत से लेकर सार्वजनिक संस्थान अपने प्रचार-प्रसार के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग कर रहे हैं| सोशल मीडिया मार्केटिंग ने बाजार को एक क्लिक तक सीमित कर दिया है| जहां एक तरफ सोशल मीडिया की पहुंच एवं प्रायोगिक क्षमताएं लोग की जीवन शैली को आसान बना रही हैं वहीं बढ़ता साइबर क्राइम लोगों के लिए तमाम मुसीबतें भी पैदा कर रहा है|

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया ऑनलाइन मीडिया का अभिन्न अंग है| सोशल मीडिया 2.0 वेब तकनीक पर आधारित ऑनलाइन वेबसाइट के जरिए लोगों को जुड़ने का मंच प्रदान करती है| सोशल मीडिया टेक्स्ट, ऑडियो और वीडियो तीनों ही प्रकार की सामग्री को प्रेषित करती है| इन साइट्स से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया साइट्स पर एकाउंट बनाना पड़ता है| एकाउंट क्रिएट करने के लिए आपके पास किसी भी ई-मेल सर्विस देने करने वाली वेबसाइट जैसे जीमेल, याहू आदि का ई-मेल एकाउंट होना चाहिए, जिसे आप सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर रजिस्टर कर सोशल मीडिया एकाउंट बना सकते हैं| आज विश्व की हजारों किलोमीटर्स में फैली आबादी एक क्लिक से एक दूसरे के आमने-सामने आ जाती है और व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों ही प्रकार से अपने विचारों को व्यक्त कर पाती है| सूचना प्रौद्योगिकी ने सभी सीमाएं लांघ कर अपने को विश्व पटल पर सर्वोत्तम स्थान प्रदान करा दिया है| वर्तमान में समाज के छोटे से छोटे मुद्दों को विश्व स्तर का मंच प्राप्त है। सोशल मीडिया ने लोगों की दिनचर्या में अपना स्थान बना लिया है, लोग इसे जीवन का अहम हिस्सा मानने लगे हैं। यह उन्हें लोगों से जोड़ कर विश्व स्तर पर पहचान देती है। यह माध्यम आज के युग का सबसे लोकप्रिय माध्यम बनता जा रहा है। वर्तमान में लोग सिर्फ सोशल मीडिया से जुड़ने के लिए ही इंटरनेट की दुनिया में प्रवेश करते हैं। अब लोग ऐसा भी कहने लगें हैं कि सोशल मीडिया के बिना वेब अधूरा है। सोशल नेटवर्किंग प्रदान करने में फेसबुक, गूगल प्लस, ट्वीटर, लिंक्ड-इन, ऑरकुट तथा यू-ट्यूब आदि नेटवर्किंग साइट्स मौजूद हैं।

सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव

मानव समाज की हमेशा से ही अपनी बात को एक दूसरे तक पहुँचाने की लालसा रही है| साथ ही समाज में सूचना के प्रवाह में माध्यमों की महती भूमिका रही है| वर्तमान में सोशल मीडिया व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों प्रकार की सूचना संप्रेषण का लोकप्रिय माध्यम माना जाता है| सोशल मीडिया की बढ़ती लोकप्रियता एवं पहुंच समाज में शिक्षा, सूचना, स्वास्थ्य एवं जागरूकता के प्रसार में अहम भूमिका का निर्वहन कर रहा है| डिजिटल इंडिया, ई-क्रांति जैसी योजनाएं ग्रामीण अंचलों में इंटरनेट की सुविधा मुहैया कराने के लिए प्रतिबद्धता से कार्य कर रही हैं| साथ ही साथ सोशल मीडिया के जरिए गवर्नेंस की पहल लोगों को एक ही स्थान पर शॉपिंग, बैंकिंग, टिकटिंग, लर्निंग एवं सूचना हस्तांतरण की सुविधा मुहैया करा रही है| समाज एक ऐसी कड़ी है जहां सुविधाओं के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलू उजागर होते हैं| सोशल मीडिया के बहुत से सकारात्मक पहलू हैं तो वहीं बहुत से नकारात्मक पहलू भी हैं| जन चेतना के विकास में सोशल मीडिया की भूमिका नजर आती है तो आतंकवाद के लिए हो रहे सोशल मीडिया के प्रयोग को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है|

सोशल मीडिया का समाज पर सकारात्मक प्रभाव

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है| जाने-माने जनसंचारशास्त्री विद्यावाचस्पति ने कहा है कि पत्रकारिता पांचवां वेद है| अर्थात समाज के समावेशी विकास में जनमाध्यमों की सक्रियता महती भूमिका रखती है| समाज के विकास में सूचना प्रसार मुख्य जरूरत है| लोकतांत्रिक समाज की मुख्य कड़ी जनमाध्यम हैं| लोकतंत्र में जनता के हितों की परिचायक मीडिया होती है| साथ ही साथ सरकार की बात को जनमानस तक एवं जनमानस की बात सरकार तक पहुँचाने का कार्य मीडिया करती है| सोशल मीडिया को जन चेतना मंच के नाम से संबोधित किया जाता है| सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम है जहां जनता स्वयं अपने विचार बिना किसी रोक-टोक के विश्व के किसी भी कोने में व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप संप्रेषित कर सकती है| सोशल मीडिया की वैश्विक ग्राम की अवधारणा ने इसे वर्तमान में सबसे लोकप्रिय माध्यम बना दिया है| भ्रष्टाचार के विरोध में अन्ना हजारे का शंखनाद हो या चीन जैसे देश में अभिव्यक्ति की आवाज को आयाम देना रहा हो सभी इसके उत्कृष्ट उदाहरणों में से एक हैं| अरब में सोशल मीडिया के जरिए जैसमीन रेवोल्यूशन जैसे उदाहरण हों या भारतीय रेल में ट्वीटर के जरिए मदद की गुहार हो, सभी समाज को एक जुट करने में सोशल मीडिया की भूमिका को प्रदर्शित करते हैं| आज बहुत से विश्वविद्यालय सोशल नेटवर्किंग के जरिए फ्री ऑनलाइन रिसोर्सेज विकसित कर रहे हैं| साथ ही विभिन्न वेबसाइट्स ऑनलाइन ट्यूटोरियल चला रही हैं जिससे जुड़ कर लोग सीख पा रहे हैं| सोशल मीडिया ऑनलाइन ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म मुहैया करा रहा है जिसके जरिए लोग अपने व्यवसाय को विश्व स्तर पर पहचान दिला पा रहे हैं| कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन में सोशल मीडिया ने बड़े बदलाव किए हैं| आज कॉर्पोरेट हाउसेस मीटिंग के लिए वीडियो कांफ्रेंसिंग एवं पत्र व्यवहार के लिए ई-मेल का प्रयोग कर रहे हैं| देश की मुख्य धरोहर मानी जाने वाली कृषि के विकास के लिए सरकार द्वारा सोशल मीडिया का प्रयोग किया जा रहा है| इस क्रम में सरकार द्वारा कई ऑनलाइन पोर्टल शुरू किए गए हैं, जिनके द्वारा कृषि से संबन्धित विभिन्न जानकारियों को साझा किया जा रहा है| साथ ही साथ अनाज के अपडेट बाजार भावों को किसान को मुहैया करने के लिए मोबाइल एप भी विकसित किया गया है| धनुष का कोला वेरी डी हो या दामिनी को इंसाफ दिलाने की मुहिम बहुत से उदाहरण मौजूद हैं जो सोशल मीडिया के समाज के विकास में सकारात्मक भूमिका को उजागर करते हैं|

सोशल मीडिया का समाज पर नकारात्मक प्रभाव

प्रत्येक सिक्के के दो पहलू होते हैं| ऐसे ही सोशल मीडिया के बहुत से सकारात्मक प्रभाव हैं तो नकारात्मक प्रभाव भी नजर में आए हैं| सोशल मीडिया में आतंकवाद एक बड़ी समस्या है| एक रिपोर्ट के मुताबिक आईएस आतंकी संगठन सोशल मीडिया के जरिए दुनिया भर से 30 हजार लड़ाकों की भर्ती कर चूका है| इसके अलावा यदि बात करें तो अश्लील सामग्री भी सोशल मीडिया के लिए एक बड़ी चुनौती है| जोकि एक बड़े बिजनेस में तब्दील हो रहा है| वर्तमान में पोर्न साइटों का बिजनेस 60 बिलियन पौंड है। इंटरनेट पर पोर्न से संबंधित 420 मिलियन इंटरनेट पेज हैं। भारत में व्यस्क फिल्म देखने की उम्र सीमा 18 वर्ष है, लेकिन सोशल मीडिया के माध्यम से किशोर भी व्यस्क फिल्में आसानी से देख रहे हैं। सोशल मीडिया के जरिए अफवाहों का फैलाना आम सा हो गया है| असम की हिंसा हो या मुजफ्फरनगर दंगे, अफवाहें सोशल मीडिया के जरिए फैली थीं| 2012 जून के आखिरी हफ्ते में महानायक अमिताभ बच्चन की गाड़ी की दुर्घटना की अफवाह सोशल मीडिया पर जमकर प्रसारित हुई थी। असम हिंसा, म्यांमार में मुस्लिम समुदाय के लोगों पर अत्याचार और मुंबई व कई अन्य शहरों में प्रदर्शन के बीच सोशल मीडिया और मोबाइल एसएमएस के जरिए पूर्वोत्तर के लोगों को जिस तरह निशाना बनाया गया, वो अपने आप में न केवल बेहद संवेदनशील मामला है, बल्कि चेताने वाला है। पूर्वोत्तर के लोगों को धमकाने के लिए फेसबुक, ट्वीटर और यूट्यूब जैसे मंचों का इस्तेमाल एक नए किस्म के खतरे की तरफ इशारा कर रहा है। अप्रैल 2013 में दुनिया की प्रतिष्ठित समाचार एजेंसी एसोसिएटेड प्रेस के ट्वीटर एकाउंट से एक संदेश प्रसारित हुआ, जिसने कुछ क्षणों के लिए हड़कंप मचा दिया। एपी के ट्वीटर एकाउंट से एक ट्वीट हुआ, "व्हाइट हाऊस में दो विस्फोट--राष्ट्रपति ओबामा घायल"| इस छोटे से ट्वीट को चंद सेकेंड में हजारों लोगों ने री-ट्वीट कर दिया। नतीजा अमेरिका के सरकारी महकमे में हड़कंप मच गया| बाद में पता चला कि एपी का ट्वीटर खाते को हैक कर लिए गया था| इस तरह के तमाम उदाहरण हैं जो सोशल मीडिया के समाज पर नकारात्मक उदाहरण को प्रस्तुत करते हैं|

निष्कर्ष

सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिसने आम नागरिक को अपने विचार व्यक्त करने का आसान मंच प्रदान किया है| सोशल मीडिया की इस आजादी ने जहां एक तरफ जन चेतना जाग्रत की है वहीं कुछ समाज विरोधी ताकतों ने इसका गलत इस्तेमाल भी किया है| सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलुओं को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है तो इसके जरिए बढ़ रहे साइबर क्राइम से भी इंकार नहीं किया जा सकता है| आज हमें जरूरत है सोशल मीडिया के प्रयोग के तरीके के प्रति जागरूकता फैलाने की, जिससे आंदोलनों को स्वर देने वाले मंच पर आतंकवाद, अश्लीलता एवं धोखा-धड़ी जैसे तमाम नकारात्मक पहलुओं को नियंत्रित किया जा सके|

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कुमार, सु. (2004). इंटरनेट पत्रकारिता. नई दिल्ली: तक्षशिला प्रकाशन.
2. Anbarasan, E. (2007). Citizen Journalism and New Media. In N. Rajan (Ed.), 21st Century Journalism in India. New Delhi: Sage Publications.
3. Kumar, S. (2007). The Information Revolution and the Emerging Ecology. In N. Rajan (Ed.), 21st Century Journalism in India. New Delhi: Sage Publications.
4. सोनी, सु. (2009). नवीन मीडिया प्रविधियां . जयपुर: बुक एनक्लेव.
5. Arya, N. (2011). Social Media. New Delhi: Anmol Publication Pvt. Ltd.
6. Ei Chew, H., LaRose, R., Steinfield, C., & Velasque, A. (2011). The Use of Online Social Networking by Rural Youth and its Effects on Community Attachment. Information, Communication & Society, 14(5), 726-747.
7. शर्मा, वि. (2011). आधुनिक पत्रकारिता प्रभाव एवं कार्य. जयपुर: इशिका पब्लिशिंग हाउस.

8. जोशी, श., एवं जोशी, शि. (2012). वेब पत्रकारिता नया मीडिया नए रुझान. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन
9. प्राइवेट लिमिटेड.
10. सिंह, सुरजीत (2012). मीडिया अचीवर्स. जयपुर: हार्सवैक पब्लिकेशन.
11. Martin, P., & Thomas, E. (2012). Social Media Usage and Empact. N ew Delhi: Global Vision Publishing House.
12. Mishra, R. (2012). Social networking sites as alternative tool of political communication: some grassroot experience. In A. Saxena, Issue of communication development and society. New Delhi: Kanishka Publications, Distributors.
13. Gagan, G. (2012). Social Media Networking and concept of International Citizenship. In A.Saxena (Ed.), Issue of communication development and society (pp. 163-167). New Delhi: Kanishka Publisher, Distributors.
14. Mathur, P. (2012). Social Media and Networking Concept trend and dimensions (pp. 2-3). New Delhi: Kanishka Publisher, Distributors.
15. चतुर्वेदी, ज. (2013). मीडिया समग्र (भाग-3) ज्ञान-क्रान्ति और साइबर संस्कृति. दिल्ली: स्वराज प्रकाशन
16. P., Acharya, K. (2013). Social Networking: Youth in New Millennium. Communication Today, (Oct-Dec), 75-86.
17. Gupta, K. (2013). ICT Vision 2020: A Milestone. Communication Today, (Oct-Dec), 44 53.
18. Mastrodicasa, J., & Metellus, P. (2013). The Impact of Social Media on College Students. Journal of College and Character, 14(1), 21-30.
19. Xenos, M., Vromen, A., & D. Loader, B. (2014). The great equalizer? Patterns of social media use and youth political engagement in three advanced democracies. Information, Communication & Society, 17(2), 151-167.
20. Fleck, J., & Leigh, J.-M. (2015). The Impact of Social Media on Personal and Professional Lives: An Adlerian Perspective. The Journal of Individual Psychology , 71 (2), 135-142.